मूल मुद्दे की बात

बापू ! यह वीतराग का मार्ग अलौकिक है। जड़ व चेतन दोनों का सदैव प्रगट भिन्न स्वभाव है। जड़ की पर्याय जड़ से होती है, दूसरे कोई भी द्रव्य अपने द्रव्य-गुण-पर्यायों को उसमें डालते नहीं हैं, मिलाते नहीं हैं; इसलिये आत्मा जड़ की क्रिया को कभी भी नहीं करता - यह सिद्ध होता है। भाई ! 'मैं खाता हूँ, बोलता हूँ, अपने शरीर को हिला-चला सकता हूँ इत्यादि अनेक प्रकार से मैं परद्रव्य की क्रिया कर सकता हूँ'- ऐसा मानना मिथ्या श्रद्धान है तथा इसका फल चार गतियों में परिभ्रमण करना है।

जीव अपने गुण-पर्यायों को परद्रव्य में मिलाये बिना, तद्रूप किये बिना पर का कार्य कैसे कर सकता है ? अपने द्रव्य-गुण-पर्यायों को परद्रव्य में मिला नहीं सकता, तद्रूप कर नहीं सकता, क्योंकि वस्तु के स्वरूप में ऐसी कोई शक्ति या सामर्थ्य ही नहीं है; अत: वस्तुस्वरूप से ही उसका निषेध है। जिनागम का यह अटल सिद्धांत है कि एक द्रव्य अन्य द्रव्य का कार्य नहीं कर सकता, फिर भी जगत बाहर की क्रिया का कर्ता बनकर मिथ्यात्व का सेवन करता है; परन्तु जिसको सत्य समझना हो उसे यह सिद्धांत स्वीकार करना ही पड़ेगा, अन्यथा असत्य तो अनादि से मान ही रखा है और इसी के परिणामस्वरूप यह संसार दशा वर्त रही है। भाई ! सर्वज्ञदेव के द्वारा कहे गये नवतत्त्वों का यथार्थ स्वरूप समझकर उसका श्रद्धान जिनको करना हो, उन्हें उक्त सिद्धांत को स्वीकार करना ही पड़ेगा। निमित्त से कार्य होता है - इस बात का भगवान सर्वज्ञदेव ने सदैव निषेध किया है। यही सत्य की यथार्थ घोषणा है। इसे बहुत ही सावधानी से समझना चाहिए।

जगत में अनन्त जीव हैं तथा अनन्त अजीव जड़ पदार्थ हैं। यदि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता बने, तद्रूप परिणमन करे तो वे सब अनन्तपने कैसे रह सकेंगे? जब ऐसा माने कि अनन्त द्रव्यों में प्रत्येक द्रव्य अपने-अपने द्रव्यरूप से तथा अपनी-अपनी पर्यायरूप से अपना परिणमन करते हैं, तब ही अनन्त द्रव्य सिद्ध हो सकते हैं। पर से परिणमन होना मानने पर सब एकमेक हो जावेंगे, अनन्त द्रव्य भिन्न-भिन्न नहीं रह सकेंगे। अत: प्रत्येक द्रव्य का परिणमन परनिरपेक्ष है, स्वतंत्र है - यह मूल मुद्दे की बात है।

- प्रवचनरत्नाकर, भाग 4 पृष्ठ 175-176

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2538) 351 अंक : 3

मत कीज्यौ जी यारी...

मत कीज्यौ जी यारी, ये भोग भुजंग सम जान के।।टेक।।
भुजंग डसत इक बार नसत है, ये अनन्त मृतुकारी।
तिसना तृषा बढे इन सेयें, ज्यौं पीये जल खारी।।1।।
रोग वियोग शोक वनिता, धन, समता लता कुठारी।
केहरि करि अरी न देत ज्यों, त्यों ये दें दु:ख भारी।।2।।
इनमें रचे देव तरु थाये, पाये श्वभ्र मुरारी।
जे विरचें ते सुरपति अरचे, परचे सुख अधिकारी।।3।।
पराधीन छिन माँहि छीन ह्वै, पापबन्ध करतारी।
इन्हैं गिनैं सुख आक माहिं तिन, आमतनी बुधि धारी।।4।।
मीन मतंग पतंग भृंग मृग, इन वश भये दुखारी।
सेवत ज्यौं किंपाक ललित, परिपाक समय दु:खकारी।।5।।
सुरपति नरपति खगपति हू की, भोग न आस निवारी।
'दौल' त्याग अब भज विराग सुख, मिलै मोक्ष सुखकारी।।6।।

- कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

संवर एवं निर्जरा तत्त्व

शम-दम तैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये।
तप-बल तैं विधि झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिये।।९।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

आत्मारूपी जहाज में मिथ्यात्व-रागादि छिद्रों द्वारा कर्मरूपी जल का आना आस्रव है। सम्यग्दर्शनपूर्वक शुद्धता तथा वीतरागता होने पर उन छिद्रों का बन्द होना और कर्म का आना रुकना संवर है। जैसे नौका में एकत्र हुए पहले के पानी को बाहर निकाल देते हैं, वैसे ही तप के द्वारा विशेष शुद्धि होने पर आत्मा में से कर्मों का झड़ जाना निर्जरा है। ऐसी संवर-निर्जरा जीव को सुख का कारण है; अत: उसका सदा आचरण करना चाहिए।

सर्वप्रथम संवर और निर्जरा को पहचानना चाहिए। संवर-निर्जरा शरीर की अवस्था से नहीं होते; अपितु जीव के उपयोग की शुद्धि तथा वृद्धि के द्वारा ही होते हैं। जो निर्जरा चैतन्य की उग्र शुद्धतारूप तप के बल से ही होती है, वही सदैव आचरने योग्य है। जो देह से भिन्न चैतन्य को नहीं जानता और देह से कष्ट सहन कर निर्जरा करना चाहता है, उसे सच्ची निर्जरा नहीं होती; उसे निर्जरा तत्त्व की पहचान भी नहीं है। ज्ञानी को तो निर्जरा में कष्ट नहीं, अपितु महा आनंद आता है।

प्रश्न ह्न अकेला शुद्ध आत्मतत्त्व ही मानें और ये सब न मानें तो ?

उत्तर ह्न भाई ! जो शुद्ध आत्मा को सच्चे रूप से जाने, उसके ज्ञान में इन सभी तत्त्वों का स्वीकार आ ही जाता है। जब ऐसा जाना कि मैं शुद्ध आत्मा हूँ, तब ऐसा भी ज्ञान हुआ कि शुद्धात्मा से विपरीत रागादि अशुद्धभाव मैं नहीं हूँ; अत: उन रागादि को अर्थात् आस्रव-बंध को हेय जाना। आस्रव आदि शब्द भले ही न जानता हो; किन्तु उसके निषेध का भाव तो ज्ञान में वर्तता ही है। वह शुद्ध आत्मा को पहचानने पर अनुभव में आनेवाले आनन्द को अच्छा/उपादेय समझता है।

ऐसा परिणाम तो संवर-निर्जरा है; अत: संवर-निर्जरा-मोक्ष के नाम ज्ञात न होने पर भी उनका ज्ञान हो जाता है।

जीव के सुख-दु:ख का कारण अपना भाव है; सम्यक्त्वादि वीतरागभाव सुख है और मिथ्यात्वादि भाव दु:ख है। हरी वनस्पति पवन के झकोरे से जब लहराती हो, उस समय भी वे एकेन्द्रिय जीव अनन्त दुख का वेदन कर रहे हैं। सिर पर हजार मन की शिला पड़ी हो, शरीर पिस गया हो - इतनी प्रतिकूलता के काल में भी जीव समाधान करके अंतर में शांत अनाकुल परिणाम रख सकता है; क्योंकि जीव शरीर से भिन्न है। लोग तो बाहर से देखते हैं कि शरीर में छेदन-भेदन हुआ; अत: वह जीव दु:खी होगा; परन्तु वही संयोग होते हुए भी शांत परिणाम वाला जीव दु:खी नहीं होता। जीव के अपने अंदर जितना मिथ्यात्वादि कषायभाव है, उतना ही उसको दु:ख है और सम्यक्त्वादि निराकुलभाव ही सुख है। आत्मा का आनंद स्वभाव है, उसे पहचानकर अनुभव करे, तभी जीव को सच्चा सुख व आनंद होता है; उससे ही आस्रव-बंध टलते हैं और संवर-निर्जरा होते हैं। जब तक जीव कर्म के आने के कारणरूप मिथ्यात्वादि भावों को नहीं छोड़ता, उनके किसी भी अंश को (शुभराग को भी) भला जानता है, तब तक उसको सच्ची संवर-निर्जरा नहीं होती, धर्म नहीं होता, मोक्षमार्ग नहीं होता।

धन आवे या जावे, उसके कारण जीव को सुख-दु:ख नहीं है।

पुत्र जन्मे या मरे, उसके कारण जीव को सुख-दु:ख नहीं है।

देह निरोगी हो या रोगी, उसके कारण जीव को सुख-दु:ख नहीं है।

अरे जीव ! तेरे आनन्दस्वभाव का भान करने से तू सुखी होगा और उसको भूलने से तू दु:खी होगा। अरे भाई ! तू तेरी भूल से दु:खी है और दूसरे का दोष निकालेगा तो तेरे दु:ख और तेरी भूल कहाँ से मिटेगी ? तेरी भूल और भूलरहित ज्ञानस्वभाव, इन दोनों को स्वीकार करने पर ही स्वभाव के आश्रय से भूल मिटकर निर्दोषता होगी, तभी सुख होगा।

अज्ञानी को अनादि से देहबुद्धि एवं पराश्रय का ऐसा रंग चढ़ गया है कि अपने सम्यक्त्वादि गुण के लिए भी वह पर का आश्रय मानता है और अपने दोष भी दूसरे

के ऊपर डालता है। हे भाई ! कोई भी परवस्तु तेरे गुण-दोष या सुख-दु:ख का कारण नहीं है। तेरे परिणाम में तेरे स्वभाव की अनुकूलता ही सुख और ज्ञानस्वभाव से प्रतिकूलता ही दु:ख है, देह की अनुकूलता या प्रतिकूलता में तेरा सुख-दु:ख नहीं है। पुत्रहीन होना, विधवा होना, क्षयरोग होना, छेदन-भेदन होना, बम गिरना ह्न इनसे जीव को दु:ख नहीं है, वे तो भिन्न वस्तु हैं। भिन्न वस्तु का तेरे में अस्तित्व ही नहीं है, तब वे तुझे दु:ख-सुख कैसे देंगी ? तू अपने स्वभाव को भूलकर, संयोग को देखकर मोह-राग-द्वेष करता है, उसी से तू दु:खी होता है। तुझे अपने आनन्दस्वभाव को देखने से सुख होगा। इसप्रकार तेरे सुख-दु:ख के कारण तुझमें ही है, दूसरे में नहीं। उसको पहचानकर, उसमें से दु:ख के कारणरूप आस्रव-बन्ध को छोड़ और सुख के कारणरूप संवर-निर्जरा को प्रगट कर।

आनन्दस्वभाव का अस्तित्व तेरे में त्रिकाल है; इस अस्तित्व को भूलकर स्वयं तूने ही पर्याय में क्षणिक दु:ख उत्पन्न किया है। तेरे असंख्यप्रदेशी चैतन्यधाम में अनन्तगुण और उनकी पर्यायें - इतना तेरा अस्तित्व है। अपने में आनन्द के अस्तित्व को देखेगा तो तेरी पर्याय में भी आनन्द होगा। अन्तर्मुख होकर अपने आनन्द के अस्तित्व को ही कारण बनाने से आनन्द के अनुभवरूप कार्य होता है। किसी बाह्यकारण से आनन्द नहीं हो सकता। आत्मा का ज्ञानस्वभाव आनन्द का ही कारण है, वह दु:ख का कारण नहीं है; रागादि आस्रवभाव दु:खरूप ही हैं, वे कभी सुख का कारण नहीं हो सकते। इसप्रकार ज्ञान व राग की अत्यन्त भिन्नता है। श्री कुन्दकुन्दस्वामी कहते हैं कि -

ये सर्व जीवनिबद्ध अध्रुव शरणहीन अनित्य हैं।
ये दु:ख, दु:खफल जानके, इनसे निवर्तन जीव करे।।

(- समयसार गाथा-७४)

जीव-अजीव का भेदज्ञान करके अर्थात् सात तत्त्व का यथार्थ ज्ञान करके जीव आस्रवों से भिन्न हो जाता है और ज्ञानस्वभाव में एकाग्रतारूप संवरदशा को धारण करता है। अत: वीतराग भेदज्ञान का बार-बार अभ्यास करना चाहिए।

(क्रमश:)

नियमसार प्रवचन -

त्रिकाली आत्मा का भजन कर!

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 43वीं गाथा के पश्चात् समागत कलशों पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है -

(मालिनी)

अनिशमतुलबोधाधीनमात्मानमात्मा
सहजगुणमणीनामाकरं तत्त्वसारम्।
निजपरिणतिशर्माम्भोधिमज्जन्तमेनं
भजतु भवविमुक्त्यै भव्यताप्रेरितो य:।।६४।।

(रोला)

सर्वतत्त्व में सार मगन जो निज परिणति में
सुखसागर में सदा खान जो गुण मणियों की।
उस आतम को भजो निरन्तर भव्यभाव से
भव्यभावना से प्रेरित हो भव्य आत्मन्।।६४।।

भव्यता से प्रेरित हे निकट भव्यात्माओं ! भव से मुक्त होने के लिए निरन्तर उस आत्मा को भजो; जो अनुपम ज्ञान के आधीन है, सहज गुणमणियों की खान है, सर्वतत्त्वों में सारभूत तत्त्व है और जो निज परिणति के सुखसागर में मग्न है।

योग्य जीव संसार से पार होने के लिये निरन्तर शुद्ध आत्मा को भजें।

जो जीव मोक्ष के योग्य हैं तथा अपनी योग्यता से जो प्रेरित हुए हैं, वे जीव भव से छूटने के लिये इस आत्मा को भजें। मेरा मोक्ष होगा या नहीं - ऐसा पूछने के लिये भगवान के पास नहीं जाना पड़ता। अहो ! मेरा चैतन्य आत्मा अल्पकाल में मुक्ति प्राप्त करेगा। बोधिबीज कहो या सम्यग्ज्ञान कहो - वह चैतन्य में से आता है। उस बोधिबीज में से केवलज्ञान प्रकट होगा - ऐसी प्रेरणा योग्य जीव को अपने अन्तर में से मिली है, किसी अन्य से नहीं। जिन्हें मुक्ति की तीव्र अभिलाषा हो, वे जीव संसार से पार होने के लिए शुद्धात्मा को निरन्तर भजो। धर्मी को निर्विकल्प दशा के समय अपने आत्म-भगवान में स्थिरता होती है और राग होने पर भगवान

के ऊपर लक्ष जाता है; परन्तु भगवान से कल्याण होगा - ऐसी दृष्टि एकसमय भी नहीं होती। पुण्य-पाप और निमित्त की मुख्यता कभी मत करो; अपितु शुद्धस्वभाव की मुख्यता करो। खाते, पीते, सोते, जागते हर दशा में और हर क्षेत्र में अपने शुद्धस्वभाव की रुचि और मुख्यता करो - मुख्यता का अभाव मत होने दो।

प्रश्न ह्न तो फिर हम व्रत, तप, उपवास आदि कब करें ?

समाधान ह्न यह सभी इसमें गर्भित हो जाते हैं। शुद्धस्वभाव की एकाग्रता करने पर राग का अभाव हो जाता है। उसमें किस-किस प्रकार के शुभराग का अभाव करके शुद्धता प्रकट हुई, उसके भेद बतलाते हैं। व्रत, तप, उपवास, बारह भावना, बाईस परीषह, निर्दोष आहार का विकल्प, यात्रा, विनय, पंचसमिति आदि शुभराग अनेक प्रकार के आते हैं, वे जानने के लिये हैं। शुद्धस्वभाव में लीनता होने पर इन भेदों का अभाव हो जाता है - अतः एकाग्रता ही धर्म है।

शुद्ध आत्मा ज्ञान-दर्शनादि सहज गुणमणि की खान है, उसमें रत्नत्रय पकता है।

कैसा है शुद्ध आत्मा ? जिसे उपमा नहीं दी जा सकती, ऐसे त्रिकाली ज्ञान के आधीन है। किसी देव-शास्त्र-गुरु के आधीन नहीं है, पुण्य-पाप के आधीन भी नहीं है। वह सहज अनन्त गुणों की खान है। कोयला परिवर्तित होकर हीरा बनता है, उसीप्रकार मणि आदि नवनिर्मित अवस्था है; जबकि आत्मा के गुणों की खान नई नहीं है, वह तो स्वाभाविक ज्ञान-दर्शनरूप गुणमणि की खान है। उसका भान करे तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के तीनों रत्न प्रकट हों। वे कहाँ से उत्पन्न होते हैं? सहज गुणमणि की खान में से उत्पन्न होते हैं।

शुद्ध आत्मा सब तत्त्वों में सार है और वह निजपरिणति के सुख-सागर में लीन होता है।

पुनः कैसा है शुद्ध आत्मा ? जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन नव तत्त्वों में शुद्धजीवतत्त्व साररूप है। संवर-निर्जरा अधूरी पर्याय है और मोक्ष पूर्ण प्रकट पर्याय है; किन्तु उन सर्व पर्यायों के प्रकट होने का आधार एक कारण-परमात्मा है - उसमें से ये पर्यायें प्रकट होती हैं। पुनः त्रिकाली भगवान आत्मा अपनी परिणति के सुख-सागर में मग्न होता है। क्षीरसागर का पानी दूध के रंग जैसा है और उसी रूप में दिखाई पड़ता है; उसी तरह आत्म-सागर अपने सुख-आनन्द में लीन है। ऐसे आत्मा को भजने के लिए कहा; त्रिकाली आत्मा को सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रकट होता है - यही आत्मा का भजन है।

(द्रुतविलंबित)

भवभोगपराङ्मुख हे यते पदमिदं भवहेतुविनाशनम्।
भज निजात्मनिमग्नमते पुनस्तव किमध्रुववस्तुनि चिन्तया।।६५।।

(दोहा)

भवभोगों से पराङ्गमुख भवदुखनाशन हेतु।
ध्रुव निज आतम को भजो अध्रुव से क्या हेतु।।६५।।

भव और भोगों से पराङ्गमुख हे यति ! यह ध्रुवपद संसार के कारणों का विनाश करने वाला है। निजात्मा में मग्न होने की भावनावाले हे यतिगणों ! इस ध्रुवपद को ही भजो; अध्रुव वस्तुओं की चिन्ता से तुम्हें क्या प्रयोजन है ?

यहाँ मुनि को संकेत करके बात करते हैं। कैसे हैं वे साधु ? अपने शुद्ध आत्मा में स्थिर रहने की इच्छा वाले हैं, चतुर्गति के भव मेरे में नहीं है - ऐसी श्रद्धापूर्वक स्वभाव-सन्मुख हुए हैं। ऐसे मुनि से कहते हैं कि हे मुनि ! मिथ्यात्व-राग-द्वेष भव के हेतु हैं। आनन्दकन्द शुद्ध आत्मपद की सेवा से मिथ्यात्व और राग-द्वेष का विनाश होता है। अतः उसी की उपासना-सेवा कर, उससे भव का नाश होगा। देव-शास्त्र-गुरु का, राग-पर्याय का, अपूर्ण निर्मल-पर्याय का सेवन मत करो; अरे ! सेवन तो अपने स्वभाव का कर; क्योंकि तेरे स्वभाव से बाहर जितनी भी वस्तुयें हैं, वे सब अध्रुव हैं। पुण्य, व्यवहार, विकल्प अनित्य हैं - अध्रुव हैं; अतः उनसे क्या प्रयोजन ? तेरे आत्मा को उनका प्रयोजन नहीं है। अतः ध्रुव शुद्ध आत्मा को ही तू भज।

(द्रुतविलंबित)

समयसारमनाकुलमच्युतं जननमृत्युरुजादिविवर्जितम्।
सहजनिर्मलशर्मसुधामयं समरसेन सदा परिपूजये।।६६।।

(दोहा)

जन्म मृत्यु रोगादि से रहित अनाकुल आत्म।
अमृतमय अच्युत अमल मैं बंदूँ शुद्धात्म।।६६।।

जो अनाकुल है, अच्युत है, जन्म-मृत्यु-रोगादि रहित है, सहज निर्मल सुखामृतमय है, उस समयसार को मैं समरस (समताभाव) द्वारा सदा पूजता हूँ।

जैसे लौकिक में कहा जाता है कि ध्रुवतारा अपना स्थान नहीं छोड़ता, वैसे ही वह ध्रुवस्वभाव भी अपना शुद्धस्वभाव कभी नहीं छोड़ता।

कैसा है तत्त्व? एकसमय की पर्याय के रागरहित आनन्दमय है - अनाकुल

है। वर्तमान पर्याय का राग-द्वेष क्षमा की विकृति का सूचक है। विकृति के पीछे क्षमा-सागर स्थायी अनाकुल शान्तस्वरूप रह रहा है। आकुलता स्थायी स्वभाव नहीं हो सकती। आत्मा का स्थायी स्वभाव शान्त और अनाकुल है।

पुनश्च, वह शुद्धतत्त्व अच्युत है। विकार निकल जाता है; परन्तु शुद्धस्वभाव कभी छूटता नहीं। वह शुद्धस्वभाव कभी जन्मता नहीं, मरता नहीं और उसमें रागादि होते नहीं, रोग-शोक-उपाधि आदि आत्मा के मूल स्वभाव में हैं ही नहीं।

संसार के लोलुपी जीव कहते हैं कि 'काम-काज के आगे हमें मरने की भी फुरसत नहीं' - ऐसे जीवों को तीव्रकषाय के भाव वर्तते हैं। ऐसे जीव को धंधा व्यापार अच्छा चलता दिखाई पड़ता हो तो भी वह जीव कषाय की धधकती दुकान अन्दर में चला रहा है। क्रोध, मान, माया, लोभ के परिणाम करके भव-भ्रमण का लाभ प्राप्त करता है। पर्यायबुद्धि में जो जीव रुका है, उसके ध्रुवबुद्धि नहीं होती। जीव के शुद्धस्वभाव में हर्ष, शोक की उपाधि नहीं है। लौकिक में जो कहावत है कि ध्रुवतारा अपना निश्चित स्थान नहीं छोड़ता, वैसे ही आत्मा का ध्रुवस्वभाव अपनी शुद्धता का स्थान कभी नहीं छोड़ता। राग-द्वेष ऐसा होगा अथवा राग कैसा करना - इससे तुझे क्या प्रयोजन है? - कुछ भी नहीं। इसलिये आत्मा अनाकुल है, रागादि से रहित है - उसकी दृष्टि कर।

पुनश्च, आत्मा स्वाभाविक निर्मलसुख अमृतमय है, उसमें किंचित् भी दुःख नहीं - आत्मा ऐसे सुख से परिपूर्ण है। वर्तमान पर्याय को गौण करके त्रिकाल स्वभाव की दृष्टि कर।

जो जीव शुद्ध आत्मारूपी लक्ष्मी को उपशम रस से भजता है वही वास्तविक धनतेरस प्राप्त करता है।

यह प्रवचन धनतेरस के दिन हो रहा है। मुनिराज कहते हैं कि ऐसे शुद्धात्मा को मैं समरसभाव से पूजता हूँ। समयसार शास्त्र की बात नहीं; किन्तु समयसार अर्थात् शुद्धात्मा को पूजता हूँ। देव-गुरु को नहीं, पुण्य को नहीं, एकसमय की पर्याय को भी नहीं; किन्तु अकेले शुद्धात्मा को पूजता हूँ। धनतेरस में अज्ञानी जीव धन की पूजा करते हैं और दूध, दही आदि पदार्थ खाते हैं; परन्तु उसमें सुख नहीं है, वह तो सब आकुलता है। आत्मा त्रिकाल शुद्ध है, उसे पुण्य-पापरहित उपशमरस से पूजता हूँ, आत्मा की तरफ झुकता हूँ। जैसे भगवान के ऊपर अभिषेक करते हैं, वैसे ही त्रिकालस्वभाव भगवान के ऊपर उपशमरस से अभिषेक कर, वही भगवान की वास्तविक पूजा है। वह स्वरूपलक्ष्मीरूपी धन की पूजा है - उसे धनतेरस की पूजा कहते हैं। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : द्रव्य-गुण-पर्याय के भेद के विचार में भी मिथ्यात्व किस प्रकार है ?

उत्तर : भेद का विचार करना मिथ्यात्व नहीं है। ऐसा भेद-विचार तो सम्यग्दृष्टि को भी होता है; किन्तु उस भेद-विचार में जो रागरूप विकल्प है, उसे लाभ का कारण मानना और उसमें एकत्वबुद्धि करके अटक जाना मिथ्यात्व है। एकत्वबुद्धि किए बिना मात्र भेद-विचार मिथ्यात्व नहीं है, वह तो अस्थिरता का राग है।

प्रश्न : नयपक्ष से अतिक्रान्त, ज्ञान-स्वभाव का अनुभव करके उसकी प्रतीति करना सम्यग्दर्शन है - इस प्रकार सम्यग्दर्शन की विधि तो आपने बतलाई; परन्तु उस विधि को अमल में कैसे लावें ? विकल्प में से गुलाँट मार कर निर्विकल्प किस प्रकार हों ? वह समझाइए।

उत्तर : विधि यथार्थ समझ में आ जाये तो परिणति गुलाँट मारे बिना रहे नहीं। विकल्प की और स्वभाव की जाति भिन्न-भिन्न है, ऐसा भान होते ही परिणति विकल्प में से छूटकर स्वभाव के साथ तन्मय हो जाती है। विधि को सम्यक्रूपेण जानने का काल और परिणति के गुलाँट मारने का काल; दोनों एक ही हैं। विधि जानने के बाद उसे सिखाना नहीं पड़ता कि तुम ऐसे करो। जो विधि ज्ञात की है, उसी विधि से ज्ञान अन्तर में ढलता है। सम्यक्त्व की विधि जानने वाला ज्ञान स्वयं कहीं राग में तन्मय नहीं होता, वह तो स्वभाव में तन्मय होता है और ऐसा ज्ञान ही सच्ची विधि को जानता है। राग में तन्मय रहने वाला ज्ञान सम्यक्त्व की सच्ची विधि को नहीं जानता।

प्रश्न : बन्धन का नाश निश्चय-सम्यग्दर्शन से होता है या व्यवहार-सम्यग्दर्शन से ?

उत्तर : जिसको निश्चय-सम्यग्दर्शन प्रगट हुआ हो, उस जीव को व्यवहार-सम्यग्दर्शन में दोष (अतिचार) होने पर भी वह दोष दर्शनमोह के बन्ध का कारण नहीं होता; क्योंकि निश्चय-सम्यग्दर्शन के सद्भाव में मिथ्यात्व संबंधी बन्धन नहीं होता। किसी जीव को व्यवहार-सम्यग्दर्शन तो बराबर हो, उसमें किंचित भी अतिचार न लगने देता हो; परन्तु उसे निश्चय-सम्यग्दर्शन नहीं है तो मिथ्यात्व या मोह का बन्ध बराबर होता रहता है। व्यवहार-सम्यग्दर्शन मिथ्यात्व को टालने में समर्थ नहीं है; अपितु निश्चय सम्यग्दर्शन ही मिथ्यात्व का बन्ध नहीं होने देता। अतः यह सिद्धांत निकला कि निश्चय से बन्ध का नाश होता है, व्यवहार से नहीं।

समाचार दर्शन -

तीर्थराज सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के -

सौधर्म इन्द्र श्री अजित जैन का स्वागत एवं पत्रिका विमोचन समारोह संपन्न

बड़ौदा (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट द्वारा शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन एवं पात्रों का सम्मान समारोह दिनांक 15 सितम्बर को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री शोभाबेन रसिकलाल धारीवाल पुणे एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बसन्तभाई एम. दोशी मुम्बई, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री हितेनभाई शेठ मुम्बई, श्री विमलजी जैन दिल्ली, श्री निहालचंदजी जैन जयपुर, श्री रमेशचंदजी दोशी, श्री अक्षयभाई दोशी मुम्बई, श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद, लाला अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री भरतभाई टिम्बडिया कोलकाता, श्री परेशजी बखारिया मुम्बई, श्री राजूभाई अहमदाबाद, श्री प्रतीकभाई अहमदाबाद, श्री विजयकुमारजी जैन पाटनी अहमदाबाद, श्री आलोक कुमार जैन कानपुर, श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. वासन्तीबेन मुम्बई आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, ब्र. हेमन्तभाई गांधी, पण्डित मुकेशजी शास्त्री विदिशा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में पंचकल्याणक के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री अजितभाई-अनिताबेन बड़ौदा का ट्रस्ट की ओर से प्रशस्ति-पत्र, शॉल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी ने बिना किसी भेदभाव के सभी प्रांतों के अनेक भाषा-भाषी जैन भाई-बहनों को एक जाजम पर बैठा दिया। सभी को तत्त्व के आधार पर संगठित कर दिया। इसी प्रकार रसिकभाई ने भी अपनी उदारता से सम्पूर्ण जैन समाज का हृदय जीता है। अजितभाई भी उसी लाइन पर चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त पंचकल्याणक के माता-पिता डॉ. शरद-माधवी जैन भोपाल एवं प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली का भी सम्मान किया गया। साथ ही ब्रह्मदत्त भोजनालय एवं मुमुक्षु भवन के निर्माण के प्रमुख दानदाता श्रीमती शोभाबेन रसिकलाल धारीवाल एवं श्री

रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा श्री अजितजी जैन को 'समाजरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। इसके अतिरिक्त चैतन्यधाम अहमदाबाद, श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, तीर्थधाम मंगलायतन, गजपंथा सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट, श्री कुन्दकुन्द परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर, अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली, दिगम्बर जैन समाज बड़ौदा की 13 संस्थाएं आदि अनेक संस्थाओं द्वारा सौधर्म इन्द्र का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने किया। भव्य कार्यक्रम का सफल निर्देशन श्री कश्यप अजित जैन ने, आर.एस.ए. टीम बड़ौदा एवं सकल दिगम्बर जैन समाज बड़ौदा के सहयोग से किया।

जयपुर शिविर का हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा 15 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर आपको देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि अनेकों शीर्षस्थ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

आप सभी को अपने इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हमारा भावभीना हार्दिक आमंत्रण है।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होनेवाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में **दिनांक 19 अगस्त** को **'जैनदर्शन के आलोक में पूजन का महत्त्व'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता पण्डित रमेशचन्दजी जैन लवाणवालों ने की। संचालन सुमित जैन एवं अनुभूति जैन ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से अक्षय उभेगाँव तथा शास्त्री वर्ग से मयंक जैन अमरमऊ को चुना गया।

2. दिनांक 26 अगस्त को **'घातिया कर्मों का स्वरूप : एक अनुशीलन'** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता ब्र.यशपालजी जैन ने की। मुख्य-अतिथि के रूप में श्री ताराचन्दजी सौगानी मंचासीन थे। सभा का संचालन सनत जैन एवं विवेक गडेकर ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से अमन जैन तथा शास्त्री वर्ग से कुलभूषण अंबेकर को चुना गया।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को गम्भीरतापूर्वक करणानुयोग के अध्ययन करने की प्रेरणा दी। श्री सौगानीजी ने कहा कि 5 मिनिट में अपने विषय को व्यवस्थित करके बोलना बहुत कठिन कार्य है, उन्होंने विद्यार्थियों की इस कला की सराहना करते हुये जीवन पर्यंत तत्त्वज्ञान में लगे रहने की प्रेरणा दी। दोनो गोष्ठियों का संयोजन विवेक जैन भिण्ड एवं नवीन जैन ने तथा आभार प्रदर्शन महाविद्यालय-अधीक्षक श्री सोनूजी शास्त्री ने किया।

3. दिनांक 9 सितम्बर को **'दशलक्षण महापर्व : एक अनुशीलन' भाग -1** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. प्रभाकरजी सेठी ने की। सभा का संचालन मयंक जैन भिण्ड एवं अनुज जैन ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से रमन जैन तथा शास्त्री वर्ग से समर्पण जैन व सनत जैन को चुना गया।

4. दिनांक 16 सितम्बर को **'दशलक्षण महापर्व : एक अनुशीलन' भाग -2** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. कमलेशजी जैन ने की। सभा का संचालन गोमटेश्वर चौगुले एवं अभिषेक इन्दौर ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सिद्धार्थ जैन उपाध्याय कनिष्ठ तथा वैभव जैन उपाध्याय वरिष्ठ को चुना गया।

जैन तत्त्वज्ञान अब रेडियो पर भी

● हिन्दी/गुजराती भाषा में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं अन्य विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों/भक्ति/बालकक्षा इत्यादि धार्मिक कार्यक्रमों का 24 घंटे 7 दिन प्रसारण।

● जैन रेडियो सुनने के लिए टाइप करें - www.Jainmedialive.com;
e-mail - info@jainmedialive.com

युवा संस्कार शिविर संपन्न

बिजौलिया (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कोटा के तत्त्वावधान में दिनांक 19 व 20 अगस्त को दो दिवसीय तीर्थवन्दना एवं युवा संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. अमितजी विदिशा, ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, ब्र. चन्द्रेशजी शिवपुरी, पण्डित जयकुमारजी बारां, पण्डित शनिजी शास्त्री जयपुर आदि अनेक विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री जयकुमारजी चेतन कुमारजी जैन बारां वाले, उद्घाटनकर्त्ता श्री नत्थीलालजी, मनोजकुमारजी जैन जैसवाल, ध्वजारोहणकर्त्ता श्री ज्ञानचन्दजी जैन कोटा, मुख्य अतिथि श्री पंकजजी मेहता (प्रदेश महासचिव-कांग्रेस), विशिष्ट अतिथि श्री प्रेमचन्दजी बजाज, विधानकर्त्ता श्रीमती विमला जैन माताश्री प्रवीणकुमारजी जैन जैसवाल एवं मुख्य कलश विराजमानकर्त्ता श्री ओमप्रकाशजी अनूपकुमारजी जैन जैसवाल (भूतबंगला वाले) थे।

इस अवसर पर चौंसठ ऋद्धि मण्डल विधान का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 300-400 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।समापन के अवसर पर सायंकाल पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना के प्रवचन का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि **कोटा नगर में दिनांक 10 से 18 अगस्त** तक ब्र. चन्द्रेशजी शिवपुरी के प्रवचनों का लाभ मिला, जिससे महती धर्मप्रभावना हुई।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित आशीषजी शास्त्री मौ एवं श्री महेन्द्रजी लुहाड़िया द्वारा संपन्न हुये। **- सुरेन्द्र कुमार जैन**

हार्दिक बधाई !

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय आशुभाषण प्रतियोगिता में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रेजीडेन्सी, उदयपुर की छात्रा कु. पायल जैन सुपुत्री डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इस उपलक्ष्य में बोर्ड द्वारा 1500/- रुपये नकद एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

2. दिल्ली निवासी श्री धनपाल सिंह जैन (कपड़े वालों) एवं श्रीमती रेशम देवी जैन के सुपौत्र श्रीमती आरती एवं श्री जिनेन्द्र कुमार जैन के सुपुत्र चि. पुलकित जैन का शुभ विवाह सौ. रुचिका जैन पौत्री श्री महेन्द्र चन्द जैन पुत्री श्रीमती पूनम एवं श्री संजय कुमार जैन करोलबाग नई दिल्ली के साथ दिनांक 30 जून को संपन्न हुआ। आपकी ओर से 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

वीतराग-विज्ञान एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

सम्मेदशिखरजी में होनेवाले पंचकल्याणक के –

सौधर्म इंद्र-इंद्राणी अजित-अनिता जैन का सत्कार

नागपुर : यहाँ महावीर नगर स्थित श्री सैतवाल संघटन मंडल के भव्य हॉल में रविवार, दिनांक 19 अगस्त को शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी में आयोजित होनेवाले श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के सौधर्म इंद्र व शची इंद्राणी श्री अजित जैन व सौ. अनिता जैन बड़ौदा का भव्य सत्कार समारोह श्री आदिनाथ एवं श्री सुरेंद्र नखाते परिवार द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सम्मेदशिखर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता मुंबई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश मा. न्यायमूर्ति श्रीषेणजी डोणगांवकर ने की। प्रमुख अतिथि के रूप में श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री वसंतभाई दोशी, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महावीर विद्या निकेतन के निर्देशक डॉ. राकेशजी शास्त्री, प्राचार्य पंडित विपिनजी शास्त्री (चिरंतन ज्वैल्स), विद्या निकेतन के संयोजक श्री नरेशजी सिंघई, सौ. संपदाजी डोणगांवकर, सत्कारमूर्ति सौधर्म इन्द्र अजितजी जैन, शची इंद्राणी सौ. अनिताजी जैन तथा श्री आदिनाथ नखाते मंचासीन थे।

नखाते परिवार के सदस्यों द्वारा श्री अजितजी-अनिताजी जैन का तिलक लगाकर, माल्यार्पण, अंगवस्त्र तथा वस्त्रादि प्रदान कर भव्य सत्कार किया गया। इस अवसर पर उन्हें एक सुंदर 'सन्मान-पत्र' भी प्रदान किया गया, जिसका वाचन डॉ. राकेशजी शास्त्री ने किया। नागपुर स्थित विविध सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं ने भी उनका सत्कार किया।

सत्कारमूर्ति श्री अजितजी जैन ने अपने उद्‌बोधन में नखाते परिवार व नागपुर समाज द्वारा प्राप्त इस सत्कार व स्नेह हेतु सबके प्रति आभार व्यक्त किया। अंत में श्री सुरेंद्रजी नखाते ने आभार प्रदर्शन किया। सभा का सफल संचालन पंडित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री ने किया।

युवा शिविर सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट द्वारा दिनांक 10 से 12 अगस्त तक युवा वर्ग के लिये **'आओ जानें जैन धर्म'** के अंतर्गत त्रिदिवसीय **क्रमबद्धपर्याय** शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे युवा विद्वान पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने तीन दिनों में लगभग 9 घण्टे कक्षा के माध्यम से क्रमबद्धपर्याय को चारों अनुयोगों के माध्यम से सिद्ध किया।

शिविर में लगभग 150 युवक-युवतियों ने भाग लिया। इन सहित लाभ लेनेवालों की संख्या 300 से अधिक रही। व्यवस्था की दृष्टी से युवावर्ग के बैठने के लिये पृथक् कक्ष रखा गया था। कार्यक्रम का संचालन पण्डित खेमचन्दजी जैनदर्शनाचार्य, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं श्री तपिशजी शास्त्री ने किया। आयोजन में सभी स्थानीय विद्वानों का सहयोग रहा।

– सुभाष जैन

महिला फैडरेशन की गतिविधियाँ

नागपुर (महा.) : यहाँ अ. भा. जैन महिला युवा फैडरेशन की त्रैमासिक रिपोर्ट निम्न है-

1. दिनांक 23 मई को महिला युवा फैडरेशन का नवीन चुनाव सम्पन्न हुआ।

2. दिनांक 2 जून को ब्र. आरती दीदी छिन्दवाड़ा की उपस्थिति में शपथ-ग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ।

3. दिनांक 1 जुलाई को मीटिंग में पदाधिकारियों को उनकी योग्यतानुसार कार्य सौंपे गये एवं 'वीरशासन जयन्ती पर्व क्या है ?' एवं द्वादशांग की परिपाटी के सम्बन्ध में विशेष कक्षा का आयोजन किया गया।

4. दिनांक 31 जुलाई को कोटेशन सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें तीन ग्रुप - पाठशाला, विद्यानिकेतन एवं मुमुक्षु सम्मिलित हुये। कुल 49 प्रतियोगियों ने भाग लिया। तीनों ग्रुप में से प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को रक्षाबन्धन के दिन पुरस्कार वितरित किये गये।

5. दिनांक 1 अगस्त को प्रात: 8 बजे वात्सल्य के प्रतीक रक्षाबन्धन पर्व के उपलक्ष्य में अहिंसा रैली का आयोजन किया गया। इसमें सैकड़ों लोग सम्मिलित हुये। सभी मुमुक्षु अहिंसा की प्रतीक एक झण्डी लिये हुये थे। यह रैली शहर के प्रमुख मार्गों से निकाली गई। सर्वत्र प्रमुख चौराहों पर अहिंसा रैली का परिचय प्रदान किया गया। इस अवसर पर पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

6. दिनांक 2 अगस्त को रक्षाबन्धन पर्व के उपलक्ष्य में कु. दीक्षा जैन, कु. अनुभूति जैन, कु. कृति जैन एवं मंगलार्थी संयम जैन ने पाठशाला के छात्रों के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। स्थानीय विद्वान डॉ. राकेशजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया।

संस्था की गतिविधियों से डॉ. स्वर्णलता जैन ने अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत एवं पण्डित आदेशजी शास्त्री ने किया।

हार्दिक बधाई !

जैनदर्शन के अध्येता विद्वान डॉ. वीरसागरजी जैन का दिनांक 16 सितम्बर को भट्टारकजी की नसियां में जैन विद्या संस्थान द्वारा उनके द्वारा रचित ग्रन्थ ''भारतीय दर्शन में आत्मा एवं परमात्मा'' के लिए महावीर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. वीरसागरजी टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के होनहार विद्यार्थी हैं और वर्तमान में तत्त्वप्रचार के कार्यों के साथ-साथ लालबहादुर शास्त्री वि.वि. दिल्ली में जैनदर्शन विभाग में प्राध्यापक हैं। आपकी अनेक मौलिक एवं सम्पादित कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

वैराग्य समाचार

1. दिल्ली निवासी श्री पूनमचंदजी सेठी का दिनांक 19 अगस्त को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन परमागम मंदिर ट्रस्ट सोनागिरि के अध्यक्ष थे। आप गहन स्वाध्यायी थे तथा जीवन पर्यंत गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान से जुडे रहे। आपके चिरवियोग से मुमुक्षु समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है।

2. बड़ामलहरा (म.प्र.) निवासी पण्डित बाबूलालजी शास्त्री का दिनांक 22 अगस्त को 78 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विधान आदि आयोजनों में सक्रिय सहयोग रहता था। आपका सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में सक्रिय सहयोग रहा। आप तीर्थधाम सिद्धायतन के सक्रिय सदस्य थे।

3. सिरसागंज-फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री कैलाशचंदजी पोद्दार का दिनांक 21 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी एवं तत्त्वजिज्ञासु थे। आपकी स्मृति में आपके पुत्रों श्री प्रताप चन्द, प्रभाष चन्द, सत्येन्द्र कुमार एवं संजीवकुमार की ओर से वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

4. कोटा (राज.) निवासी श्रीमती पुष्पा देवी बज धर्मपत्नी स्व.श्री सुगनचन्दजी बज का दिनांक 14 जनवरी 2012 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

5. मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्रीमती प्रेमवती जैन धर्मपत्नी स्व. श्री लक्ष्मी निवास जैन का दिनांक 16 मार्च को 103 वर्ष की आयु में समाधि भावनापूर्वक देहावसान हो गया।

6. बड़ागांव-छतरपुर (म.प्र.) निवासी पण्डित शिखरचन्दजी शास्त्री का दिनांक 8 सितम्बर को 33 वर्ष की आयु में दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। इस अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 9 सितम्बर को प्रात: 9 बजे से श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के 17वें बैच के विद्यार्थी थे। इस प्रसंग पर उनके परिवार द्वारा संस्था को 1100/- रुपये की दान राशि प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

डॉ. संजय शाह सम्मानित

नई दिल्ली : यहाँ 'इण्डियन सोसायटी ऑफ इन्टरनेशनल लॉ, वी.के. कृष्णन मेनन भवन में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शाह बांसवाड़ा को दिनांक 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर स्वतन्त्र मंच द्वारा प्रमाण-पत्र एवं शॉल ओढाकर 'शिक्षक श्री' अवार्ड से सम्मानित किया गया।